राजनीतिक आदर्श - लोकतंत्र

लोकतंत्र का अर्थ एवं परिभाषा

लोकतंत्र का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द "Democracy" है जो ग्रीक भाषा के दो शब्द 'डेमोस' (Demos) और "क्रेटोस" (Kratos) से मिलकर बना है। "डेमोस" का अर्थ है 'लोक' और 'क्रेटोस' का अर्थ है "शक्ति" या "सत्ता" इस प्रकार 'डेमोक्रेसी' शब्द का अर्थ है - "लोगों का शासन" या जनता का शासन। इसलिए 'लोकतंत्र' ऐसी सरकार को कहा जाता है जिसमें जनता को राजसत्ता का अंतिम स्रोत समझा जाता है और जनता स्वयं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपने प्रतिनिधियों के द्वारा शासन में भाग लेती है। लोकतंत्र को आरम्भ में केवल एक राजनीतिक सिद्धान्त माना गया था मगर बाद में इसके अन्तर्गत सामाजिक आर्थिक तथा नैतिक मूल्यों को भी रखा गया। इससे लोकतंत्र आज एक अत्यंत ही वृहत सिद्धान्त के रूप में प्रसिद्ध हो गया कहा जाता है कि लोकतंत्र केवल सरकार का रूप ही नहीं, बल्कि राज्य और समाज का भी रूप है। एक लोकतन्त्रीय राज्य को न केवल सर्वोच्च अधिकार होता है, बल्कि उसे सरकार को उसमें नियंत्रण करने तथा बर्खास्त करने का भी अधिकार होता है। एक लोकतंत्रीय समाज में समानता तथा भाईचारे की भावना व्याप्त रहती है।

अब्राहम लिंकन लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि " लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता द्वारा शासन है

ब्राइस कहते हैं, " लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें राज्य के अधिकार किसी विशेष श्रेणी के लोगों को नहीं बल्कि समूचे समाज के लोगों को प्रदान किए जाते हैं।

गेटेल कहते हैं " लोकतंत्र वह राज्य-शासन है जिसमें सर्वोच्च सत्ता में भी भाग लेने का अधिकार केवल जनता को ही प्राप्त होता है।"

लोकतंत्र के मूल सिद्धान्त तथा आधार :-

i) स्वतंत्रता (Liberty) → लोकतंत्र का मुख्य आधार स्वतंत्रता है। लोकतंत्र में जितनी स्वतंत्रता जनता को प्राप्त है, उतनी स्वतंत्रता किसी और प्रकार की सरकार को प्राप्त नहीं है।

2) समानता (Equality) → लोकतंत्र में समानता पर विशेष बल दिया गया। इसमें ऊँच-नीच, भेद-भाव, छुआछूत का भाव नष्ट हो जाता है।

3) विश्वबन्धुता (Fraternity) - लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब संसार में शांति बनी रहे - अन्यथा लोकतंत्र को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

4) जनता का संप्रभुता (Sovereignty) लोकतंत्र में जनता को राजसत्ता का अन्तिम स्रोत माना जाता है और सरकार अपनी सारी शक्तियाँ इसी से ग्रहण करती है।

5) जनता के मौलिक अधिकार - इसमें जनता को मौलिक अधिकार दिया जाता है

6) स्वतंत्र न्यायपालिका (Independent Judiciary) - इसमें मौलिक अधिकारों की रक्षा का भार न्यायपालिका को सौंपा गया है।

7) लोकतंत्र में जनता को साध्य समझा जाता है और राज्य को साधन क्योंकि लोगों का सम्पूर्ण विकास ही इसका लक्ष्य है।

8) लोकतंत्र एक कल्याणकारी राज्य है।

9) स्वतंत्र एवं चुनाव (Free and Periodic Election) - लोकतंत्र में समय-समय पर चुनाव होते हैं जिसमें लोगों के प्रतिनिधियों को चुना जाता है जो आगे चलकर शासन प्रणाली में भाग लेते हैं।

10) व्यस्क मताधिकार (Adult Franchise) लोकतंत्र में प्रत्येक व्यस्क को मतदान करने का अधिकार है।

11) कम-से-कम दो राजनीतिक पार्टियां हो - At least two Political Parties or Pressure Groups. → लोकतंत्र की एक सभी लोग है कि कम से कम दो राजनीतिक पार्टियाँ हो, जिनमें एक शासन करे तथा दूसरा उसके विपक्ष में उसकी बुराईयों का पर्दाफाश करे।

लोकतंत्र के प्रकार

i) प्रत्यक्ष या शुद्ध लोकतंत्र - प्रत्यक्ष लोकतंत्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें सम्पूर्ण जनता स्वयं प्रत्यक्ष रूप से बिना किसी प्रतिनिधियों के प्रभुसत्ता के कार्य करती है। प्रत्यक्ष लोकतंत्र में मतदान स्वयं एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं और अपने देश के शासन के लिए कानून बनाते हैं। यह यूनान के नगर City state में तथा स्विट्जरलैंड के (Canton) में प्रचलित है। परन्तु आज के युग में प्रत्यक्ष तथा शुद्ध लोकतंत्र असंभव विचार है।

(ii) अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधात्मक लोकतंत्र ⇒ (Indirect or Representative Democracy) — अधिकतर लोकतंत्रीय देशों में लोकतंत्र का अर्थ अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधित्यात्मक लोकतंत्र है यदि लोग अपनी इच्छा को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट न करके तो अपनी इच्छा को प्रतिनिधियों के द्वारा प्रकट करते हैं। और उनके प्रतिनिधि उनकी तरफ से कानून बनाते हैं।

इन प्रतिनिधियों का संगठन समूह पर चुनाव होता है और उन्हें ही राज्य को चलाने का भार सौंपा जाता है। प्रतिनिधात्मक लोकतंत्र दो प्रकार के होते हैं :-

a) अध्यक्षात्मक तथा b) संसदीय (Presidential and Parliamentary)

आजकल संसार के बहुत से देशों में अप्रत्यक्ष लोकतंत्र प्रचलित है इंग्लैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, लंका, भारत, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जर्मनी, इटली, डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, आस्ट्रिया, बेल्जियम आदि।

लोकतंत्र के सिद्धान्त

मुख्य रूप से लोकतंत्र के दो सिद्धान्त है :-

i) Classical Liberal Theory — उदारवादी सिद्धान्त → जिसके अनुसार लोकतंत्र मात्र राजनीतिक व्यवस्था नहीं है वरन् यह पूर्ण समुदाय के सर्वांगीण विकास का आधार है। लोकतंत्र यह गारंटी देता है कि समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा को मान्यता मिलेगी तथा सरकार किसी की भी अवहेलना नहीं करेगी।

a) The Elitist Theory of Democracy ⇒ लोकतंत्र के इस सिद्धान्त की चर्चा Mosca ने अपनी प्रसिद्ध रचना "The Ruling class" में किया। Paranto और Roberto Michels ने भी इस सिद्धान्त का उल्लेख किया। इन सबों के अनुसार समाज का वर्गीकरण के आधार पर किया गया है, एक अल्पसंख्यक वर्ग जो शासन करता है एवं प्रसन्न बहुसंख्यक वर्ग जो शासित होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार राजनीतिक सत्ता अल्पसंख्यक के हाथों में है न कि बहुसंख्यक।

b) Pluralist Theory of Democracy ⇒ Libsel ने इस सिद्धान्त की चर्चा "Political Man" में की तथा Robert Dahl ने इसकी व्याख्या "A Preface of Democratic Theory and Polyarchy" में की। इस मत के अनुसार

सत्ता को अनेक वर्गो में जैसे व्यापारी, राजनीतिज्ञ, उपभोक्ता, किसान संगठन आदि विकेन्द्रित करना चाहिए इस सिद्धान्त के अनुसार सत्ता अनेक वर्गो में विकेन्द्रित है, न कि केवल कुछ ही लोगो के हाथ में होती है।

लोकतंत्र के गुण

(i) इसमें साधारण जनता के हितों के प्रति विशेष ध्यान दिया जाता है।

(ii) यह सरकार समानता पर आधारित है।

(iii) यह स्वतंत्रता तथा बंधुता जैसे उच्च आदर्शो का महान समर्थक है।

(iv) यह मनुष्य की गरिमा का समर्थक है।

(v) यह जनमत पर टिका हुआ है।

(vi) लोकतंत्र आदर्श नागरिक के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में कार्य करता है।

(vii) लोकतंत्र में क्रान्तियों का भय कम होता है।

(viii) इससे लोगों को राजनीति शिक्षा मिलती है।

(ix) इससे लोगों का नैतिक स्तर ऊँचा होता है।

(x) यह देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है और इसमें लोगो की रुचि प्रशासन में बढ़ती है।

(xi) सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक सुधार के लिए लोकतंत्र सबसे अधिक उपयुक्त है।

लोकतंत्र के अवगुण

(i) लोकतंत्र अयोग्य व्यक्तियों का शासन है → अक्सर, काबिल तथा सक्षम लोग चुनाव में जीत ही नहीं पाते है।

(ii) लोकतंत्र में संख्या का अधिक महत्व है, और गुणों का कम - लोकतंत्र में वोटों को गिना जाता है। इसे 'भीड़ का शासन' कहते है। यह बहुसंख्य को ही सर्वोच्च मानता है, चाहे अल्पसंख्य अधिक ज्ञानी क्यों न हो।

(iii) लोकतंत्र एक अत्यंत ही खर्चिला शासन प्रणाली है।
(iv) लोकतंत्र में पूँजीपतियों का बहुत अधिक प्रभाव रहता है।
(v) राजनीतिक दलों का खराब प्रभाव रहता है तथा रिश्वतखोरी की भरमार होती है।
(vi) लोकतंत्र संघर्ष और संस्कृति में बाधक है।
(vii) लोकतंत्र में बहुमत का शासन है जो कभी अन्यायी शासन बे जाता है।
(viii) लोकतंत्र में राजनीतिज्ञों का मुख्य लक्ष्य वोट की प्राप्ति करना है, चाहे वह किस तरह से भी संभव हो, अर्थात इसमें लोगों का नैतिक स्तर गिर जाता है।
(x) लोकतंत्र केवल कल्पना है और व्यवहार में असंभव है।

लोकतंत्र की सफलता की शर्तें :

(1) लोकतंत्र की सफलता के लिए सबसे पहली शर्त यह है कि इसके मौलिक सिद्धान्तों में लोगों को विश्वास हो। इन सिद्धान्तों में जो सबसे महत्वपूर्ण बात है यह कि प्रत्येक को महत्व देना चाहिए।
(2) शिक्षा के आभाव में भी लोकतंत्र की सफलता संभव नहीं है। अर्थात सभी को शिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है।
(3) कोई भी लोकतंत्र तभी सफलतापूर्वक चल सकता है जब नेता तथा जनता हृदय और खुले हृदय से आपस में मिलकर रहें।
(4) लोकतंत्र की सफलता के लिए यह भी आवश्यक है कि न एक-तरह अधिक धन हो, न दूसरी ओर अधिक गरीबी हो।
(5) लोकतंत्र की सफलता के लिए जाति और वर्ग में भेद-भाव कम से कम होना चाहिए।
6) लोकतंत्र में सफलता के लिए योग्य व्यक्तियों का चुनाव करना भी आवश्यक है।
7) प्रेस की स्वतंत्रता तथा सही खबरों की प्राप्ति भी लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।
8) योग्य जनमत भी लोकतंत्र की सफलता के लिए प्रमुख कारण है।
9) 'लोगों में जागरूकता जहाँ स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है, वहीं लोकतंत्र के लिए भी अतिआवश्यक है।